



ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

”बंगाल में लड़कियों को स्कूल ले जाने वाली गाड़ियों, पालकियों तथा शिक्षण संस्थाओं की दीवारों पर मनु-स्मृति का एक श्लोक लिखा रहता था। जिसका अर्थ था- “**बालिकाओं को बालकों के समान शिक्षा पाने का पूरा अधिकार है।**”



ईश्वर चंद्र विद्यासागर का जन्म वीर सिंह नामक गाँव में हुआ था। इनकी माता बहुत अच्छे विचारों की थीं। सभी का सम्मान करना और अपना काम स्वयं करना, यह शिक्षा उन्हें अपनी माता से मिली थी। ईश्वर चंद्र विद्यासागर की प्रारंभिक शिक्षा गाँव के ही विद्यालय में हुई थी। उच्च शिक्षा के लिए वे कलकत्ता (कोलकाता) के संस्कृत विद्यालय में गए। संस्कृत की शिक्षा के साथ-साथ वे अंग्रेजी की शिक्षा भी प्राप्त करते रहे। सन् 1839 ई० में लॉ कमेटी की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर उन्हें विद्यासागर की उपाधि मिली।

इसके अलावा न्यायदर्शन की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर 100 रुपये तथा संस्कृत काव्य रचना पर 100 रुपये का नकद पुरस्कार दिया गया। ईश्वर चंद्र विद्यासागर का हस्तलेख बहुत अच्छा था, इसलिए उन्हें मासिक छात्रवृत्ति भी मिलती थी। गुरुदेव रवींद्र नाथ ठाकुर ने ईश्वर चंद्र विद्यासागर को आधुनिक बंगाल काव्य का जनक माना है।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर स्कूलों के सहायक निरीक्षक के पद पर नियुक्त हुए। उन्होंने शिक्षा की बहुत सी कमियों में सुधार किया। उन्होंने बंगाल के सभी जिलों में 20 ऐसे आदर्श विद्यालय खोले जिसमें विशुद्ध भारतीय शिक्षा दी जाती थी।

उन दिनों संस्कृत कॉलेज में केवल उच्च जाति के लोगों को ही प्रवेश दिया जाता था। ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने इसका कड़ा विरोध किया। उनका कहना था कि हर जाति के, हर

व्यक्ति को हर प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। बंगाल में बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहन देने का महत्त्वपूर्ण कार्य ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने किया। इन्होंने अपने समय में अनेक क्षेत्रों में सुधार किए- शैक्षिक सुधार, सामाजिक सुधार और महिलाओं की स्थिति में सुधार।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर जानते थे कि बालिकाओं की शिक्षा से ही समाज में फैली रूढ़िवादिता, अंधविश्वास और कुरीतियाँ दूर की जा सकती हैं।

देश को समृद्ध एवं योग्य नागरिक प्रदान करने के लिए बालिकाओं की शिक्षा जरूरी है। उन्होंने बंगाल में ऐसे 35 स्कूल खोले जिसमें बालिकाओं की शिक्षा का प्रबंध था। वे बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए मेहनती और मेधावी छात्राओं को पुरस्कार भी दिया करते थे। उन्होंने कलकत्ता (कोलकाता) विश्वविद्यालय से सबसे पहले एम0 ए0 की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाली चंद्रमुखी बोस को पुरस्कार दिया था।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर ब्रह्म समाज नामक संस्था के सदस्य थे। स्त्री शिक्षा के साथ-साथ उन्होंने विधवा विवाह और विधवाओं की दशा सुधारने का भी काम किया। इसके लिए ईश्वर चंद्र विद्यासागर को बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

अंत में विधवा विवाह को कानूनी स्वीकृति प्राप्त हो गई। सुधारवादी विचारधाराओं का जनता के बीच प्रचार करने के लिए ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने अंग्रेजी तथा बंगला में पत्र निकाले।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर का कहना था कि कोई भी व्यक्ति अच्छे कपड़े पहनने, अच्छे मकान में रहने तथा अच्छा खाना खाने से बड़ा नहीं होता, बल्कि अच्छे काम करने से बड़ा होता है।

एक बार ईश्वर चंद्र विद्यासागर गाड़ी में कलकत्ता (कोलकाता) से बर्दवान आ रहे थे। उसी गाड़ी में एक नवयुवक बहुत अच्छे कपड़े पहने बैठा था उसे भी बर्दवान आना था। स्टेशन पर गाड़ी पहुँची, नवयुवक ने अपना सामान ले चलने के लिए कुली को पुकारा। स्टेशन पर उस समय कोई कुली नहीं था। ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने उससे कहा कि यहाँ कोई कुली नहीं है आप परेशान न हों, आपका सामान मैं लिए चलता हूँ। नवयुवक खुश हो गया। उसने कहा कि मैं तुमको पूरी मजदूरी दूँगा। घर पहुँचकर वह नवयुवक ईश्वर चंद्र विद्यासागर को पैसे देने लगा तो उन्होंने पैसे नहीं लिए।

अगले दिन बर्दवान में ईश्वर चंद्र विद्यासागर के स्वागत के लिए बहुत से लोग एकत्र हुए। वह नवयुवक भी वहाँ आया। उसने देखा कि यह तो वही व्यक्ति है, जो कल मेरा सामान लेकर आया था। नवयुवक को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह लज्जित भी हुआ। जब सभा समाप्त हुई तब वह ईश्वर चंद्र विद्यासागर के घर गया और पैरों पर गिरकर क्षमा माँगी। ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने समझाया कि अपना काम स्वयं करना चाहिए।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर उन्नीसवीं शताब्दी की महान विभूति थे। उन्होंने अपने समय में फैली अशिक्षा और रूढ़िवादिता को दूर करने का संकल्प लिया। अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए भी उन्होंने शैक्षिक, सामाजिक और महिलाओं की स्थिति में जो सुधार किए उसके लिए हमारे देशवासी सदैव उन्हें याद करेंगे।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने बालिकाओं की शिक्षा को जरूरी क्यों बताया?
2. ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने अपने समय में कौन-कौन से सुधार किए?
3. व्यक्ति के बड़प्पन के विषय में ईश्वर चंद्र के क्या विचार थे?
4. यदि आप किसी व्यक्ति या महिला के कार्यों से खुश हुए तो उनके बारे में लिखें और कक्षा में सुनाएँ।